1. अजमेर में

2. **पटकथा (पाँचवीं कक्षा के रिज़ल्ट आने पर)**

स्थान - स्कूल का मैदान ।
समय - सुबह 11 बजे ।
पात्र - 1. बेला, करीब 11 साल की लडकी, फ्रॉक पहनी है ।
2. साहिल, करीब 11 साल का लडका, कुर्ता और पतलून पहना है ।
दृश्य का विवरण - दोनों पाँचवीं कक्षा के रिज़ल्ट जानने के बाद दुख के साथ मैदान के एक पेड के नीचे खडे हैं ।

संवाद -

बेला - अरे साहिल, छठी कक्षा में तुम कहाँ पढोगे ?
साहिल - अजमेर में और तुम कहाँ पढोगी बेला ?
बेला - राजकीय कन्या पाठशाला में । अब तुम यहाँ नहीं रहोगे ?
साहिल - नहीं । तुम्हारा रिपोर्ट कार्ड ज़रा दिखाना ।
बेला - ठीक है, तुम्हारा भी दिखाना । (दोनों रिपोर्ट कार्ड एक दूसरे को दिखाते हैं ।)
साहिल - अरे तू रोती क्यों ?
बेला - (हँसते हुए) कुछ नहीं । साहिल अरे तू भी रोता है न ?
साहिल - नहीं तो ? अरे वर्षा की संभावना है । हम घर चलें ।
बेला - ठीक है , फिर मिलेंगे ।
साहिल - ठीक है बेला, बाई ।
(दोनों अलग-अलग दिशाओं से अपने घर चले जाते हैं ।)

3. माँ की आवाज़ फट जाने से चार्ली को स्टेज पर गाना पडा ।

4. चार्ली ने अपनी निष्कलंकता से गीत गाकर, बातचीत करके, नृत्य करके और गायकों की नकल उतारकर सबको खुश किया । उसकी प्रस्तुति और मासूमियत से प्रभावित होकर लोगों ने उसकी प्रशंसा की । लोगों ने उसमें एक महान कलाकार को देख लिया था ।

5. **रपट (चार्ली का पहला शो)**

माँ की आवाज़ फटी; बेटा बना शो मैन

स्थान : लंदन के प्रसिद्ध थिएटर में पहली बार कदम रखा पाँच साल का बच्चा चार्ली ने स्टेज पर चमत्कार कर दिया । गाते समय अपनी माँ की आवाज़ को फटते देखकर मैनेजर के साथ वह स्टेज पर लाया गया । चार्ली मासूमियत से गा रहा था कि लोग खुश होकर स्टेज पर पैसा फेंकने लगे । तब उसने गाना बंद करके पैसे बटोरने के बाद आगे गाने की घोषणा की । इस बात ने हॉल को हँसीघर में बदल दिया । इसके बाद उसने दर्शकों से बातचीत की, नृत्य किया और अपनी माँ सहित कई गायकों की नकल उतारी । दर्शकों ने खुशी से तालियाँ बजाकर चार्ली का अभिनंदन किया । लोगों ने उसमें एक महान कलाकार को देख लिया था ।

अथवा

माँ की डायरी (अपनी हालत और बेटे का पहला शो)

तारीख : .....

आज का दिन मैं कैसे भूलूँ ? ... दुख और खुशी भरा दिन । मेरा लाडला चार्ली आज शो मैन बन गया । उसका पहला शो हमेशा यादों में रहेगा । लगता है मैं आगे गा नहीं पाऊँगी । गले में खराबी है । गाते समय मेरी आवाज़ को फटते देखकर मैनेजर के साथ वह स्टेज पर लाया गया । मैं बहुत डर गयी थी । लेकिन बेटा चार्ली ने अपनी निष्कलंकता से गीत गाकर, बातचीत करके, नृत्य करके और गायकों की नकल उतारकर सबको खुश कराने लगा । खूब पैसा भी मिला । शैतान, मेरी फटी आवाज़ का भी नकल उतार दी । हे भगवान ! आगे भी मेरा लाडला शो में कमाल करे ।

6. कानी कुतिया

7. कवितांश का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ हिंदी के प्रमुख कवि नागार्जुन की छोटी कविता अकाल और उसके बाद से ली गई हैं। इसमें कवि ने अनेक बिंबों और प्रतीकों से सजाकर अकाल की भीषणता का वर्णन किया है।

अकाल के कारण कई दिनों तक घर में दाना नहीं था। खाना पकाने कोई न जलाने से चूल्हा रो रहा था और दाना पीसने कोई उपयोग न करने से चक्की उदास पडी थी। चूल्हा और चक्की के पास घर की कानी कुतिया अनाज आने की प्रतीक्षा में सो रही थी। भूख से तडपती छिपकलियाँ भी कीडों की तलाश में घर की दीवारों पर घूम रही थीं। अकाल में चूहों की हालत भी अनाज के बिना बहुत बुरी थी। कवितांश के ज़रिए कवि यह बताते हैं कि घर में ग्रस्त अकाल का परिणाम वहाँ के मनुष्यों पर ही नहीं सारे जीव-जंतुओं पर भी पड रहा है। कवितांश की हर पंक्तियों में कई दिनों तक का प्रयोग अकाल की तीक्ष्णता को दिखाने केलिए बार बार किया है।

कविता में कवि ने अकाल की भीषणता को चित्रित करने में सफल हुए हैं। यह कवितांश बिलकुल प्रासंगिक और अच्छी है। कवितांश में सरल भाषा का प्रयोग किया है।

8. वह + की = उसकी

9. देहात

10. सही मिलान

छोटू ने स्वयं ही	अपना नाम कलाम रख दिया।
रणविजय ने भाषण में	प्रथम पुरस्कार पाया।
दुकानवाले भाटी सा ने	कलाम की कलाकारी की प्रशंसा की।
विदेशी टूरिस्ट लूसी मैडम ने	कलाम को दिल्ली ले जाने का वादा किया।

11. गुठली

12. गुठली सोचने लगी।

13. पोस्टर (संदेश) - हर लडकी आगे बढे

हर लडकी आगे बढे

बेटी बचाओ ...

बेटी पढाओ ...।

लडका - लडकी बराबर मानो ...

उनमें भेदभाव मत करो ...

अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस - अक्तूबर 11

लडकी की प्रगति...

देश की प्रगति...।

- बालिका सेवा समिति, केरल

अथवा

गुठली का पत्र (बुआ की नसीहतें)

स्थान : .....

तारीख : .....

प्रिय सहेली,

तुम कैसी हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ। एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रही हूँ।

अपने घर के लोग मुझे पराई घर की चीज़ मानते हैं। बुआ,माँ सब यही बीच-बीच में कहती रहती है। ससुराल ही लडकियों का अपना घर है। घर में स्वतंत्रता से कुछ करने,चलने या बातचीत करने का भी हक लडकियों को नहीं। क्या यह सही है ? क्या हमें अपने भाइयों की तरह अपने घर में रहने का अधिकार नहीं ? हम लडकियों से घर में इतना भेदभाव क्यों ? मेरी समझ में नहीं आती। क्या लडकी होना कोई बुरी बात है ? क्या लडकियों केलिए हमारे संविधान में अलग नियम है ? मैं इससे बहुत दुखी हूँ। आगे मैं ऐसी व्यवहार सह नहीं सकती। लडकी-लडके से कभी कम नहीं है। इस रूढि के विरुद्ध मैं ज़रूर आवाज़ उठाऊँगी। क्या तुम भी मेरे साथ होगी।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे हो रही है ? परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना। जवाब की प्रतीक्षा में,

तुम्हारी सहेली

(हस्ताक्षर)

नाम

सेवा में,
नाम
पता।

14. फूलदेई

15. दूसरा

16. **वाक्य पिरामिड**

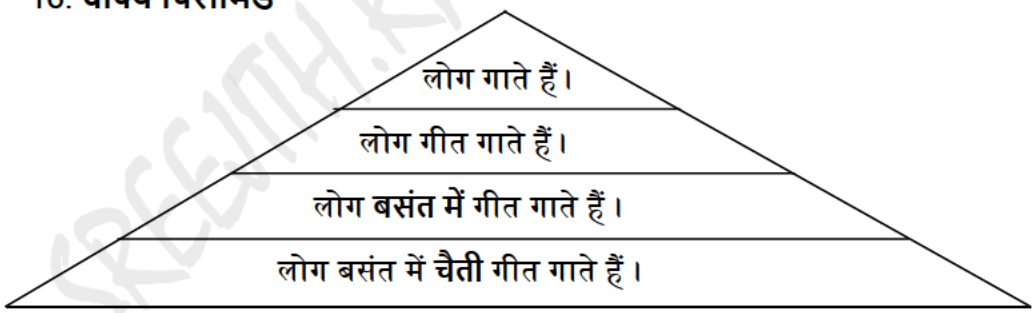

17. बहुत प्यास लग रही है।

18. कुएँ में किसी जानवर की लाश पडकर जल सड गया होगा। कोई पेड-पौधे के पत्ते गिरकर पानी सड गया होगा।

SREEJITH.R, KOVOOR, VARKALA

19. **बातचीत - जोखू और गंगी के बीच**

जोखू - बहुत प्यास लग रही है। थोडा पानी लाओ।

गंगी - अभी लाती हूँ।

जोखू - इस पानी में सख्त बदबू है न ?

गंगी - बदबू ... ! (संदेह से) वह कैसे ... ? ज़रा देखूँ ...

जोखू - (थोडी देर बाद) प्यास सह नहीं पाता। ला, थोडा पानी, नाक बंद करके पी लूँ।

गंगी - नहीं, बीमारी बढ जाएगी। मैं कहीं से दूसरा पानी लाकर देती हूँ।

जोखू - दूसरा पानी ! कहाँ से लाएगी ?

गंगी - ठाकुर और साहू के दो कुएँ तो हैं, क्या एक लोटा पानी न भरने देंगे ?

जोखू - हाथ-पाँव तुडवा आएगी। बैठ चुपके से।

गंगी - आप चिंता मत कीजिए। मुझे पता है क्या करना है।

जोखू - ठीक है। तुम्हारी मर्ज़ी। जल्दी वापस आना।

अथवा

टिप्पणी - गंगी के चरित्र पर

प्रेमचंद की कहानी ' ठाकुर का कुआँ ' का मुख्य पात्र है गंगी। गंगी एक गरीब और अनपढ औरत है। लोग उसे अछूत मानते हैं। वह जोखू की पत्नी है। वह अपने पति से बहुत प्यार करती, पति के स्वास्थ्य की चिंता रखनेवाली गृहिणी है। असल में गंगी कई सामाजिक असमानताओं की शिकार है। उसका विद्रोही दिल पुरानी रीति रिवाज़ियों और मज़बूरियों पर चोटें करता था। लेकिन मन का रोष मन में ही सीमित रहता है। वह बहुत साहसी औरत है। वह हिम्मत के साथ रात को बीमार पति केलिए साफ पानी लाने ठाकुर के कुएँ पर जाती है। वह एक समझदार औरत है। उसे ठाकुर के छल-कपट मालूम है। इस प्रकार इसके चरित्र द्वारा प्रेमचंद ने सामाजिक कुरीतियों का विरोध करनेवाली एक सशक्त स्त्री पात्र का सृजन किया है।

-oOo-

SREEJITH.R, KOVOOR, VARKALA, SCRT45